हिन्दी : पाठ्यक्रम, शिक्षण–अधिगम एवं आकलन

स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वॉलिटि एज्यूकेशन–राजस्थान

आदर्श विद्यालय योजना

शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल

2016

(खण्ड : दो–द)

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्

माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार

अनुक्रमणिका

क्रम	विवरण	पृष्ठ
	खण्ड–दो (द)	
सत्र–1	विषय की प्रकृति एवं सीखने की प्रक्रिया	1–5
सत्र–2 व 3	पाठ्यक्रम एवं पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य	6–9
सत्र–4	बाल केन्द्रित शिक्षण प्रक्रिया	10–15
सत्र–5 व 6	सीसीई स्कीम दस्तावेज़ों को समझना विषय में सतत एवं व्यापक आकलन प्रक्रिया	16–19
सत्र–7	शिक्षण नियोजन की प्रक्रिया	20–21
सत्र–8	विषय में रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन टूल एवं प्रपत्र निर्माण	22–32

एस आई क्यू ई कार्यक्रम : सहभागी संस्थाएँ

निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा विभाग
निदेशालय, प्रारंभिक शिक्षा विभाग
राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्
राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्
एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
बोध शिक्षा समिति
यूनिसेफ, जयपुर

मॉड्यूल निर्माण में तकनीकी सहयोग : बोध शिक्षा समिति एवं यूनिसेफ, जयपुर

स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वॉलिटि एज्यूकेशन–राजस्थान

आदर्श विद्यालय योजना

शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल

2016

(खण्ड : दो–द)

हिन्दी : पाठ्यक्रम, शिक्षण–अधिगम एवं आकलन

RCSE

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्

माध्यमिक शिक्षा विभाग–राजस्थान सरकार

प्रशिक्षण मॉड्यूल निर्माण समूह

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्

1. सुश्री तूलिका सैनी, उपायुक्त–एसआईक्यूई
2. सुश्री ममता दाधीच, राज्य समन्वयक, एसआईक्यूई
3. डा. गोविन्द सिंह, उपनिदेशक, प्रशिक्षण

यूनिसेफ, जयपुर

1. सुश्री सुलग्ना रॉय, शिक्षा विशेषज्ञ
2. श्री साशा प्रियो, राज्य सलाहकार–आरसीएसई

बोध शिक्षा समिति

- श्री योगेन्द्र भूषण (निदेशक बोध शिक्षा समिति) : समूह समन्वयक
- सुश्री कुसुम विष्ट, (सीनियर फैलो–हिन्दी ; ईआरसी)
- सुश्री लेखा मोहन (सीनियर फैलो–पर्यावरण अध्ययन ; ईआरसी),
- श्री राजेश कुमार शर्मा (सीनियर फैलो–गणित ; ईआरसी),
- सुश्री चेतना टण्डन (सीनियर फैलो–कला एवं संगीत ; ईआरसी)
- श्री प्रेम नारायण (बोध सलाहकार, निदेशालय माध्यमिक शिक्षा),
- सुश्री दिव्या सिंह (सीनियर फैलो–शोध ; ईआरसी)
- सुश्री नयन महरोत्रा (सीनियर फैलो–अंग्रेजी ; ईआरसी)
- श्री विनीत पंवार (सलाहकार एसआईईआरटी, उदयपुर)
- श्री उमाशंकर शर्मा (फैलो–ईआरसी)

जिला समर्थक अध्येता (डीएसएफ) – बोध एवं यूनिसेफ

गणित : • श्री धीरेन्द्र • श्री राजेश शर्मा • श्री जगदीश • श्री छोटू राम

हिन्दी : • श्री भागचन्द • सुश्री सीमा कुमावत • श्री सन्नी पाल • श्री मनिन्दर (हिन्दी)

अंग्रेजी : • श्री संजय पंडित • श्री नरेन्द्र शर्मा • सुश्री ज्योति • श्री अभिषेक (अंग्रेजी)

पर्या. अध्ययन : • श्री पंकज नोटियाल • श्री मनोज • श्री रामकिशन (पर्यावरण अध्ययन)

कला शिक्षा : • श्री अष्टम नीलकण्ठ

ग्राफ़िक्स डिज़ाइन व कम्प्यूटर कार्य :

श्री दीनदयाल शर्मा
वरिष्ठ समन्वयक, बोध
श्री के.के. चौधरी
सहवरिष्ठ समन्वयक, बोध

प्रूफ एडिटिंग (बोध) :

सुश्री चेतना टण्डन (सीनियर फैलो, ईआरसी)
सुश्री कुसुम विष्ट (सीनियर फैलो, ईआरसी)
सुश्री मीनाक्षी अग्रवाल (सीनियर फैलो, ईआरसी)
सुश्री अपूर्वा रंजन (फैलो, ईआरसी)

6 दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिन	सत्र–1	सत्र–2	लंच	सत्र–3	सत्र–4
	9:30–11:15	11:30–1:15		2:15–3:45	4:00–5:30
1	रजिष्ट्रेशन सामग्री वितरण परिचय चेतना गीत उद्घाटन प्रशिक्षण से अपेक्षाएँ	प्रशिक्षण के बारें संक्षिप्त विवरण **परिप्रेक्ष्य सत्र–1** (भाग–1) वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य एवं बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का मूल अधिकार पर संवाद। द्वारा–विडियों / नोट	1:15 से 2:15	**तकनीकी सत्र–1** (विषय समूहों में) विषय की प्रकृति एवं सीखने की प्रक्रिया	**तकनीकी सत्र–2** (विषय समूहों में) पाठ्यक्रम एवं पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य
2	चेतना गीत / बालगीत **परिप्रेक्ष्य सत्र–2** (भाग–1) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उपयुक्त पाठ्यक्रम एवं प्राथमिक शिक्षा की विधियाँ व बालकेन्द्रित शिक्षण पद्वति। द्वारा–विडियों / नोट	**तकनीकी सत्र–3** (विषय समूहों में–प्रथम विषय) शिक्षण की प्रमुख चुनौतियाँ एवं विषय में बालकेन्द्रित शिक्षण प्रक्रिया।		**तकनीकी सत्र–4** (विषय समूहों में) सीसीई स्कीम एव दस्तावेजों को समझना।	**तकनीकी सत्र–5** (विषय समूहों में) शिक्षण नियोजन एवं प्रक्रिया
3.	चेतना गीत / बालगीत **परिप्रेक्ष्य सत्र–3** (भाग–1) आकलन एवं मूल्यांकन की प्रक्रियाएँ एवं पाठ्यक्रम, शिक्षण एवं आकलन में संगतता। द्वारा–विडियों / नोट	**तकनीकी सत्र–6** (विषय समूहों में) विषय में सतत एवं व्यापक आकलन प्रक्रिया।		**तकनीकी सत्र–7** (विषय समूहों में) विषय में रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन प्रक्रिया।	**तकनीकी सत्र–8** (विषय समूहों में) रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन के लिए टूल एवं प्रपत्र निर्माण। प्रशिक्षण का फीडबैक लेना।

नोट– **प्रशिक्षण के तीन दिन उपरान्त शिक्षक साथी समूह अनुसार अपने दूसरे विषय का प्रशिक्षण प्राप्त करेंगें। जिन विषयों के मध्य यह बदलाव किया जाना है वह हैं :– ''अंग्रेजी⇆गणित'' एवं ''हिन्दी⇆पर्यावरण अध्ययन''।**

दिन	सत्र–1	सत्र–2	लंच	सत्र–3	सत्र–4
	9:30–11:15	11:30–1:15	1:15 से 2:15	2:15–3:45	4:00–5:30
4	चेतना गीत / बालगीत **परिप्रेक्ष्य सत्र–4** (भाग–2) विषयों में कला एवं संगीत का समावेश	**तकनीकी सत्र–9** (विषय समूहों में–द्वितीय विषय) विषय की प्रकृति एवं सीखने की प्रक्रिया।		**तकनीकी सत्र–10** (विषय समूहों में) पाठ्यक्रम एवं पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य।	**तकनीकी सत्र–11** (विषय समूहों में) शिक्षण की प्रमुख चुनौतियाँ एवं विषय में बालकेन्द्रित शिक्षण प्रक्रिया।
5.	चेतना गीत / बालगीत **परिप्रेक्ष्य सत्र–5** (भाग–2) प्रारंभिक शिक्षा में बालिकाओं की शिक्षा एवं जेण्डर सम्बन्धित मुद्दों पर संवाद	**तकनीकी सत्र–12** (विषय समूहों में) शिक्षण नियोजन एवं प्रक्रिया		**तकनीकी सत्र–13** (विषय समूहों में) विषय में सीसीई प्रक्रिया को समझना।	**तकनीकी सत्र–14** (विषय समूहों में) विषय में रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन प्रक्रिया।
6	चेतना गीत / बालगीत **परिप्रेक्ष्य सत्र–6** (भाग–2) दिव्यांग बच्चों के साथ काम करने की प्रक्रिया को समझना।	**तकनीकी सत्र–15** (विषय समूहों में) रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन के लिए टूल एवं प्रपत्र निर्माण।		**तकनीकी सत्र–16** (विषय समूहों में) प्रशिक्षण में किये कार्य का पुनः सिंहावलाकन एवं सीसीपी व सीसीई पर शेष रहे कार्य को पूरा करना। प्रशिक्षण का विषय आधारित फीडबैक लेना।	सामूहिक सत्र प्रशिक्षण का समापन।

नोट : परिप्रेक्ष्य सत्रों का संचालन प्रशिक्षण शिविर की विशेष परिस्थिति के अनुसार किया जा सकता है। अर्थात् उन्हें या तो सामूहिक रूप से एक जगह, दो समूहों में अथवा चार विषयगत समूहों में सम्पन्न किया जा सकता है।

तकनीकी सत्र : 1

क्र. सं.	सत्र की विषय वस्तु	पठन सामग्री	कुल समय
1.1	प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण की चुनौतियाँ, कारण एवं समाधान	भाषा शिक्षण की चुनौतियाँ, कारण एवं समाधान का समेकित दस्तावेज	1 घण्टा 30 मिनट
1.2	भाषा की प्रकृति एवं सीखने की प्रक्रिया	भाषा की प्रकृति एवं शिक्षाशास्त्र आलेख	

1.1 प्राथमिक कक्षाओं में हिन्दी शिक्षण चुनौतियाँ, कारण एवं समाधान

सत्र की पृष्ठभूमि

प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण की समस्याओं को जाने एवं समझे बिना शिक्षक प्रशिक्षण व बच्चों के साथ नये तरीकों व परिणामगत शिक्षण कराना मुश्किल है। समस्या के कारणों को जानने के बाद ही उनके समाधान का प्रयास किया जाता है। अतः इस पहले सत्र में प्राथमिक स्तर पर बच्चों को भाषा सीखने में क्या कठिनाइयाँ आ रही हैं, उनको समझने पर चर्चा की जाएगी।

उद्देश्य

- हिन्दी भाषा शिक्षण की समस्याओं को समझ सकेंगे।
- उन समस्याओं के कारणों को जान कर उन पर विचार कर सकेंगे।
- समाधान पर विचार कर सकेंगे।

सामग्री

- चार्टशीट, कागज,चुनौतियों की समेकित पीपीटी, आलेख

चर्चा के बिन्दू :

- प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को हिन्दी शिक्षण में किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?
- शिक्षक–शिक्षण विधियों और बच्चे के सीखने के मध्य तालमेल किस प्रकार से बनाया जा सकता है? क्या यह आवश्यक भी है।

सत्र संचालन हेतु गतिविधि

चरण–1 : भाषा शिक्षण की चुनौतियों से संबंधित कथन चार समूहों में दिये जायेंगे। प्रत्येक समूह को एक–एक कथन दिया जाएगा और एक–एक कथन संभागियों को अपनी ओर से जोड़ना होगा। उन चुनौतियों के कारणों और समाधान भी उपसमूह में विचार करके लिखने होंगे। इसके बाद प्रत्येक समूह किये काम का प्रस्तुतीकरण करेगा।

उपसमूहों में दिए जाने वाले कथन निम्न हैं –

- कक्षा 5 तक भी बच्चे पढ़ना नहीं जानते।
- बच्चे अपने विचारों को लिखकर व्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं।
- प्राथमिक स्तर के अधिकांश बच्चे अपनी बात को आत्म विश्वास के साथ क्रमबद्ध रूप से नहीं सुना पाते हैं।
- प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे नया सृजन करने में समस्या महसूस करते हैं।

चरण–2 : उपसूमह में किये काम के प्रस्तुतीकरण के बाद समस्याओं को वर्गीकृत करके सीखने–सिखाने से संबंधित समस्याओं को चार श्रेणियों यथा – भाषा सीखने की प्रक्रिया की समझ, क्या सिखाया जाये की जानकारी, कैसे सिखाया जाये यानि कि शिक्षण विधा और सीखने का आकलन किस तरह किया जाये। यहाँ पर चर्चा को केन्द्रित किया जायेगा।

समेकन : पीपीटी के माध्यम से एनसीएफ 2005 में वर्णित भाषा शिक्षण की समस्याएं व प्रस्तावित सुझावों का प्रस्तुतीकरण किया जायेगा। इसमें मौखिक भाषा, पढ़ने व लिखने के कौशलों से संबंधित प्रस्तुतीकरण है।

पठन सामग्री (अनुलग्नक 1) भाषा शिक्षण की चुनौतियाँ, कारण।

1.2 भाषा की प्रकृति एवं भाषा सीखने की प्रक्रिया

सत्र की पृष्ठभूमि

किसी भी विषय की प्रकृति को जाने बिना उस विषय के शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करना मुश्किल होता है। अतः विषय की प्रकृति को समझना अति आवश्यक है। इस सत्र के दौरान भाषा की प्रकृति , भाषा सीखने की प्रक्रिया और उसके शिक्षण उद्देश्यों को समझने का प्रयास किया जाएगा।

उद्देश्य

- विषय की प्रकृति के बारे में समझ बना सकेंगे।
- भाषा के वृहद दायरे को समझ सकेंगे।
- भाषा सीखने की प्रक्रिया के बारे में सीख सकेंगे।

सामग्री

- पीपीटी, आलेख ,चार्ट, स्केच कलर

चर्चा के बिन्दू

- भाषा शिक्षण हेतू विषय की प्रकृति को जानने समझने की आवश्यकता क्यों होनी चाहिए?
- भाषा सीखने की प्रक्रिया क्या व किस प्रकार होती है?

सत्र संचालन हेतु गतिविधि

चरण–1 : प्रथम सत्र में शिक्षण की समस्याओं को भाषा सीखने की प्रक्रिया से जोड़कर बातचीत की जाएगी। तत्पश्चात 4 समूहों में चार प्रकार की गतिविधियाँ की जाएगी।

- समूह एक – नीचे दिए गए प्रपत्र पर काम करने को देना।
- कार्य – बच्चे की भाषा सीखने की प्रक्रिया पर उपसमूह में विचार कर मैप तैयार करना।
  1. 0–5 व 6–10 आयु वर्ग के बच्चे क्या क्या करते हैं ?
  2. उपरोक्त गतिविधियों/कार्यों के माध्यम से बच्चे में किन किन कौशल क्षेत्रों का विकास होता है ?
  3. उक्त क्षेत्रों के विकास में विद्यालय की क्या भूमिका होनी चाहिए ?
  4. बच्चा भाषा कैसे सीखता है, इसको आरेख द्वारा प्रदर्शित करें।

0–5 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चे	6–10 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चे

- समूह दो – कोई ऐसे दो अभिनय करने का टास्क देना, जिसमें हो रहे काम को बताने में कठिनाई महसूस हो।

  प्रस्तुतीकरण हेतु निम्न प्रश्न दें –

  प्रश्न 1 : अभिनय के लिए चयनित विषयवस्तु की प्रक्रिया क्या रही?

  प्रश्न 2 अभिनय के साथ भाषा का क्या सहसंबंध है, किन–किन भाषाई कौशलों के विकास में अभिनय मदद कर सकता है?

- समूह तीन – किसी एक विचित्र जानवर का चित्र देकर उसका वर्णन व उसे नाम देना।

  प्रस्तुतीकरण हेतु निम्न प्रश्न दें –

  प्रश्न 1 :दिए गए चित्र को नाम दीजिए?

  प्रश्न 2 : चित्र का विवरण लिखिए?

  प्रश्न 3 : इस गतिविधि के माध्यम से किन कौशलों एवं किन विषयों के साथ इन्टीग्रेशन किया जा सकता है?

- समूह चार – अपरिचित भाषा के शब्दों को पढ़कर अनुमान लगाना। जिसके लिए निम्न प्रश्नों के द्वारा प्रस्तुतीकरण तैयार करने को कहें –

  प्रश्न 1 : चरण प्रथम में शब्दों के अर्थ देने का आधार क्या था?

  प्रश्न 2 : दूसरे चरण में आपको अर्थ देने में आसानी क्यों हुई ?

चरण–2 : पीपीटी या ब्लैक बोर्ड के माध्यम से बच्चे के द्वारा की जाने वाली गतिविधियाँ, गतिविधियों से विकसित हो रहे कौशल और विद्यालय की भूमिका का प्रस्तुतीकरण पर हुए कार्य को भी आधार बना कर भाषा की प्रकृति पर बात की जा सकती है, इस कार्य के लिए नीचे दिए गए दो डायग्रामों का प्रशिक्षक इस्तेमाल भाषा सीखने की पूरी प्रक्रिया को साझा करने के लिए कर सकते हैं –

डायग्राम – 1

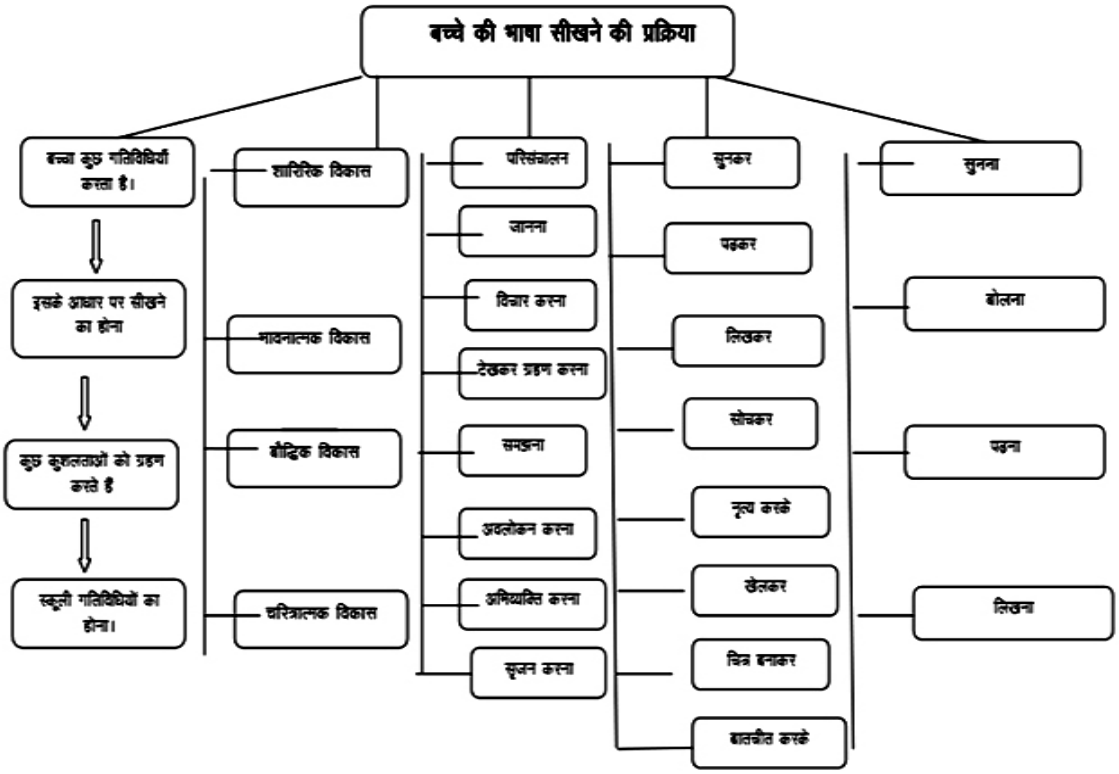

डायग्राम– 2

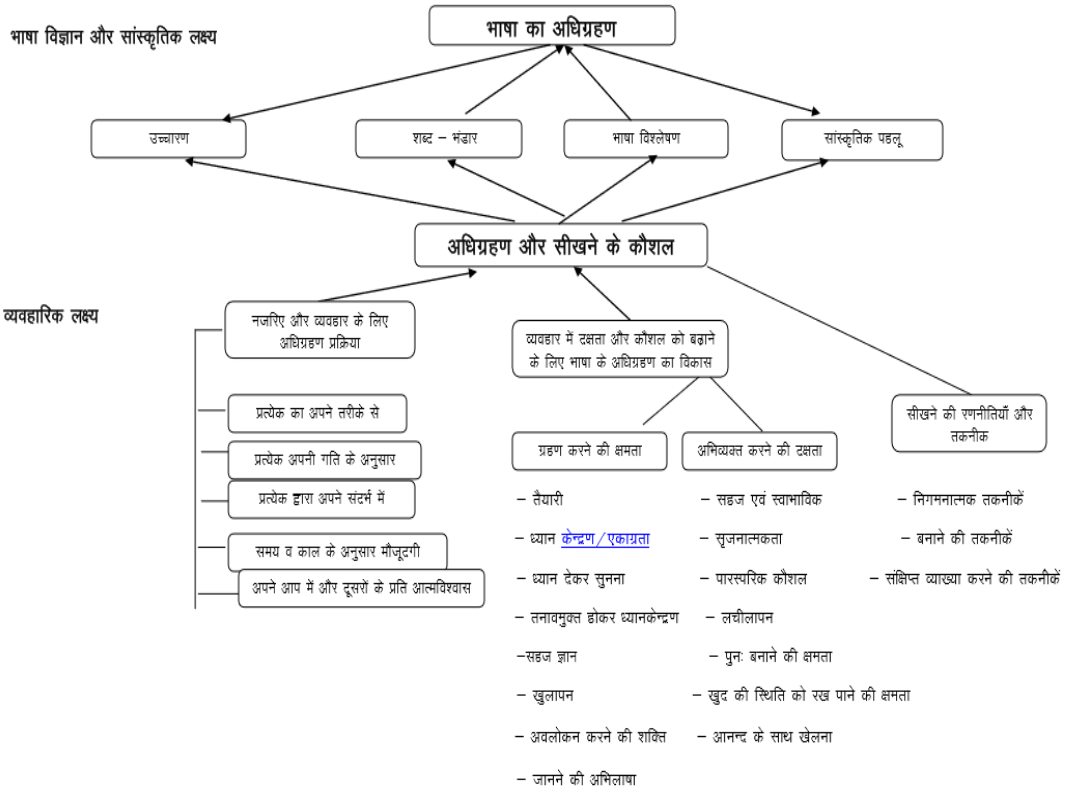

चरण–3 : भाषा की प्रकृति से संबंधित **आलेख** प्रत्येक संभागी को दिया जाएगा। अध्ययन के बाद उपसमूहों में निम्न बिन्दुओं से संबंधित बातचीत की जायेगी। (अनुलग्नक 2)

- भाषा की प्रकृति/भाषा के क्या मायने हैं ?
- बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं ?
- विषय की प्रकृति और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए भाषा के वृहद रूप का समावेश हमारी भाषा की कक्षाओं में हम कितना कर पाते हैं,? क्या कहीं हम सिर्फ लिपि शिक्षण के दायरे में ही तो बँध कर नहीं रह जाते हैं, इस पर समूह किस प्रकार से सोचता है?
- आपकी दृष्टि से आगे के लिए हिन्दी भाषा की कक्षा में किस प्रकार के बदलावों को लाया जा सकता है?
- बच्चे द्वारा भाषा सीखने की प्रक्रिया के दौरान महत्त्वपूर्ण चरण क्या–क्या होते हैं ?

सत्र समेकन

भाषा की प्रकृति व सीखने की प्रक्रिया को निम्न बिन्दुओं में समेकित करते हुए संभागियों को समझाने का प्रयास करें।

1. भाषा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो सामाजिक अन्तक्रिया से ही सीखी जाती है। भाषा दो अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य पूरे करती है, चेतना की अभिव्यक्ति और सूचना के संप्रेषण का। इस तरह भाषा विविधतम विचारों की अभिव्यक्ति, लोगों की भावनाओं और अनुभवों का वर्णन,गणितीय प्रमेयों का निरुपण तथा वैज्ञानिक व तकनीकी ज्ञान की रचना करना संभव बनाती है।
2. भाषा की बदौलत ही मनुष्य विगत पीढ़ियों द्वारा संचित अनुभव को इस्तेमाल कर सकता है और अपने द्वारा पहले कभी न देखी या न महसूस की गई परिघटनाओं के संग्रहित ज्ञान से लाभ उठा सकता है।
3. भाषा क्या–क्या करती है–
    - सुनकर और पढ़कर समझ पाने की क्षमता का विकास करती है।
    - भाषा सोचने, चीजों से जुड़ने और महसूस करने का साधन है।
    - अन्य विषयों या ज्ञान के क्षेत्रों में ज्ञानार्जन की क्षमता का निर्धारण करती है।
    - भाषा कल्पनाशीलता,मौलिकता एवं सौंदर्यबोध का विकास करने में मदद करती है।
    - रुचियों एवं क्षमताओं के विकास करने में मदद करती है।
    - भाषा स्मृति कोष का काम करती है।

तकनीकी सत्र : 2, 3

क्र.सं.	सत्र की विषय वस्तु	पठन सामग्री	कुल समय
2 3	पाठ्यक्रम एवं पाठ्यक्रमणीय उद्देश्यों को समझना। **निरंतर.....**	टर्मवार एवं कक्षावार पाठ्यक्रम विभाजन पुस्तिका की स्टेजे दस्तावेज–अनुलग्नक 3 आलेख – अनुलग्नक – 4	2घण्टा 45 मिनट

2.3 पाठ्यक्रम एवं पाठ्यक्रमणीय उद्देश्यों को समझना

सत्र की पृष्ठभूमि

भाषा पढ़ाने वाले सभी शिक्षकों या प्रशिक्षकों को इस बात को समझना आवश्यक है कि वास्तव में भाषा का पाठ्यक्रम क्या है तथा भाषा का पाठ्यक्रम अन्य विषयों के पाठ्यक्रम से किस प्रकार भिन्न है एवं ऐसा क्यों है ? का पता होने से बच्चों के साथ कार्य करने में, उम्र के अनुसार सीखने की योग्यता को ध्यान में रखकर विषयवस्तु के चयन करने में सुविधा होगी।भाषा की कक्षा में किस प्रकार से कार्य करवाया जाए कि उन पाठ्यक्रमणीय उद्देश्यों को पूरा किया जा सके?

उद्देश्य

- प्राथमिक कक्षाओं से संबंधित पाठ्यक्रम को समझ सकेंगे।
- की स्टेज वाईज विशिष्ट क्षमताओं, उनके उद्देश्य आदि को पहचान सकेंगे।
- कौशलवार बुनियादी क्षमताओं को समझ सकेंगे।
- भाषा शिक्षण के व्यापक उद्देश्यों को समझ सकेंगे।
- भाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों के बारे में समझ सकेंगे।
- कौशलवार बुनियादी क्षमताओं को समझ सकेंगे।
- पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं आकलन के सूचकों के मध्य संबंध को समझ सकेंगे।
- हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम के अनुरूप विषयवस्तु का चयन कर सकेंगे।

सामग्री

पाठ्यक्रम, **की स्टेजेज दस्तावेज** , पाठ्यपुस्तकें

चर्चा के बिन्दू

- भाषा के पाठ्यक्रम की संरचना अन्य विषयों के पाठ्यक्रम की संरचना से किस प्रकार भिन्न होता है?
- भाषा शिक्षण के कौन–कौन से उद्देश्य होते हैं?

- क्या कौशल और उद्देश्यों में अन्तर होता है, किस प्रकार का?
- पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य, पाठ्यक्रम व आकलन सूचकों के मध्य किस प्रकार से सहसंबंध को देखा जा सकता है?
- प्राथमिक स्तर के बच्चों के साथ किस प्रकार की विषयवस्तु का चयन करना उचित होगा?

सत्र संचालन हेतु गतिविधियाँ

चरण–1 : पूर्व के सत्र में भाषा सीखने की चुनौतियों पर की गई बातचीत और बच्चे क्या–क्या जानते हैं? प्रपत्र में संकलित सूचनाओं को आधार बनाते हुए संभागियों के साथ बातचीत करना कि प्राथमिक स्तर पर बच्चों को क्या–क्या सीखाना चाहिए। इस पर कुछ समय सामूहिक बातचीत की जायेगी।

चरण–2 : संभागियों को 5– 5 के उपसमूहों विभाजित करते हुए उन्हें **'टर्मवार, कक्षावार पाठ्यक्रम विभाजन'** की प्रति देते हुए उसे समझने का कार्य किया जाएगा, इस दौरान प्रशिक्षक भी उपसमूहों में हो रहे कार्य में अपनी सहभागिता करेंगे। यहाँ पर कोशिश रहेगी कि सभी संभागी इस दस्तावेज को ठीक से समझ लें।

चरण–3 : उक्त कार्य पर बातचीत के बाद पुनः संभागियों को उन्हीं उपसमूहों में प्राथमिक स्तर पर भाषा के लिए निर्धारित दो की स्टेजेज को समझने के लिए **की स्टेजेज दस्तावेज** अध्ययन हेतु दिया जाएगा, इसके लिए 20 मिनट का समय दिया जाएगा। की स्टेजवार भाषा के निर्धारित लक्ष्यों को समझने का काम किया जायेगा। की स्टेजेज के माध्यम से पाठ्यक्रम, अधिगम उद्देश्य व आकलन सूचकों को समझने का प्रयास किया जायेगा।

चरण–4 : की स्टेजेज दस्तावेज के माध्यम से भाषा की बुनियादी क्षमताओं से संबंधित कौशलों की दी गई सारणी को आधार बनाते हुए नामांकित कक्षा स्तर से पीछे के बच्चों के साथ काम करने के तरीकों पर सामूहिक बातचीत की जायेगी।

सारणी : की स्टेज वार बुनियादी क्षमताएँ

की स्टेज	मौखिक भाषा	पठन कौशल	लेखन
1	• दूसरों की बात को सुनने में रुचि और धैर्य पैदा कर सकें और सुनी गई बात पर अपनी टिप्पणी दे सकें। • संदर्भ के अनुसार उचित शब्दों का प्रयोग करते हुए पूरे–पूरे वाक्यों में अपनी बात को रख सकें।	• पाठ्यपुस्तक एवं अन्य पुस्तकों का स्वयं पढ़ने में उपयोग कर सकें। • नवीन शब्दों की संरचना कर पढ़ सकें। • चित्रों के माध्यम से शब्दों एवं उनसे संबंधित वर्णों/अक्षरों को पढ़ना	• लिपि चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर, समझकर उनमें सहसंबंध बनाते हुए लिख सकें। • अपनी कल्पना से छोटी कविता आदि को लिखने का प्रयास कर सकें। • पढ़ी गई बातों को समझकर

की स्टेज	मौखिक भाषा	पठन कौशल	लेखन
		सीख सकें। • मात्राओं की ध्वनियों, संयुक्ताक्षर, अनुस्वार, अनुनासिक ध्वनियों को विभेदित कर सकें। • निर्देशों आदि को पढ़कर उनका पालन कर सकें।	अपने शब्दों में लिखने का प्रयास कर सकें।
2	• दूसरे के विचारों को सुन व समझ सकें । • दूसरों के विचारों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें। • कहानी/कविता/विवरण आदि सहज रचनाओं को ध्यान व धैर्य से सुन सकें व सुना सकें। • स्वतंत्र एवं सृजनात्मक रूप से अभिव्यक्त कर सकें।	• पठन के प्रति ललक पैदा हो सके। • पठन के द्वारा ज्ञानार्जन एवं आनंद का अनुभव कर सकें।	• उत्साही पाठक एवं सृजनशील लेखन की दिशा की ओर बढ़ सकें। • लेखन की भिन्न –भिन्न विधाओं से परिचित हो सकें। • पढ़ी/सुनी या देखी घटनाओं पर लिखित रूप से अपनी राय व्यक्त कर सकें।

सत्र समेकन

उपसमूहों में कार्य के पश्चात सभी के साथ सामूहिक रूप से किए गए कार्य के सन्दर्भ में बातचीत करते हुए उपसमूह में यदि ऐसा कोई सवाल उभरा हो जिस पर समूह का एक मत या विचार न बन रहा हो तो उसको सामूहिक रूप से विचार–विमर्श के लिए सदन में रखा जाएगा प्रशिक्षक उस पर अपने विचार को रखते हुए समाधान का प्रयास करेंगे। अंत में पीपीटी या बोर्ड के माध्यम से दिए गए डायग्राम के द्वारा पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य एवं पाठवार उद्देश्यों के मध्य अंर्तसंबंधों को समझाते हुए सत्र का समेकन किया जाएगा –

भाषाई उद्देश्य

जो कुछ वह सुनते हैं उसे समझने की दक्षता : उसमें गैर शाब्दिक संकेतों के साथ–साथ भाषा के विभिन्न माध्यमों से सुनकर, पढ़कर, देखकर, और समझकर संबंध जोड़ने और अनुमान लगाने की कुशलता होनी चाहिए।

पाठ्यक्रम

भाषा की विविध विधाओं, जैसे– गीत, कविता, कहानी, वार्तालाप, संवाद, चित्र व दृश्य पर चर्चा आदि को सुनकर आनंद प्राप्त करना। ध्यान से एवं धैर्यपूर्वक सुनकर समझना। परिवेश एवं संदर्भ से संबंधित सामग्री को समझना। सुनने के शिष्टाचार का पालन करना। गति एवं हाव–भाव के अनुसार बोलना।

आकलन सूचक एवं पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य

सुनकर समझना एवं बोलना : सुनी हुयी सरल छोटी कविता/ बालगीत/कहानी को स्पष्ट शब्दों में दोहरा सकें।

कविता/बालगीत को लय, गति और हावभाव का तालमेल करते हुए सुना सकें।

विषयवस्तु/पाठवार उद्देश्य

–कक्षा 1

कविता को सुनकर हावभाव के साथ दोहराना। परिवेशीय यातायात के साधनों से संबंधित जानकारी एवं अनुभव को बताना। शब्द की पहचान करना एवं सीखे गए शब्दों में आए अक्षर ध्वनि को सुन कर समझते हुए उच्चारित करना।

तकनीकी सत्र : 4

क्र.सं.	सत्र की विषय वस्तु	पठन सामग्री	कुल समय
4	विषय के सन्दर्भ में – बाल–केन्द्रित शिक्षण पार्ट 1 बालकेन्द्रित शिक्षण पार्ट 2	बाल–केन्द्रित शिक्षण पर आधारित आलेख –अनुलग्नक – 5	2 घण्टा 45 मिनट

4 बाल–केन्द्रित शिक्षण पार्ट 1

भूमिका

बच्चे स्वाभाविक रूप से सीखते हैं। वे अपने आस–पास की दुनिया से बहुत ही सक्रिय रूप से जुड़े होते हैं। वे खोज–बीन करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, चीज़ों के साथ कार्य करते हैं, चीज़ें बनाते हैं व अर्थ गढ़ते हैं। समाज के साथ अन्तःक्रिया करके अपना ज्ञान निर्माण करते हैं। संस्था के रूप में विद्यालय को भी विद्यार्थियों को स्वयं के बारे में सीखने और दूसरों व समाज के बारे में जानने के नए अवसर प्रदान करना चाहिए, ताकि वे सामाजिक ज्ञान/विरासत के साथ जुड़ पाएं (चाहे उन्होंने किसी भी परिवार या समुदाय में जन्म लिया हो)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा 2005 ने सार्थक अनुभव देने, विद्यालय ज्ञान को परिवेश से जोड़ने तथा समाहित करने वाली शिक्षा प्रदान करने पर ज़ोर दिया है। इसमें बाल–केन्द्रित शिक्षण पद्धति को सिखाने के मुख्य तरीके के रूप में देखा गया है।

उद्देश्य

- बालकेन्द्रित शिक्षण को समझ सकेंगे।
- भाषा शिक्षण में विद्यार्थी केन्द्रित कक्षा की संरचना कर सकेंगे।
- कक्षाएँ सीखने पर केन्द्रित हो सकेंगी।

सामग्री :

दो कक्षाओं के चित्र, कागज व पेन

चर्चा के बिन्दू

- विषय के सन्दर्भ में बालकेन्द्रित शिक्षण के क्या मायने हैं?
- बालकेन्द्रित शिक्षण के अन्तर्गत बच्चों के सीखने–सिखाने में किस प्रकार से गुणवत्ता को लाया जा सकता है?

सत्र संचालन हेतु गतिविधियाँ

चरण–1 : संभागियों को चार उपसमूहों में विभाजित करते हुए दो कक्षाओं में चल रहे कार्य के चित्र को पठन के लिए दिया जाएगा। इस कार्य के लिए 10 से 15 मिनट का समय दिया जाएगा । चारों उपसमूहों के द्वारा अपने–अपने चित्रों पर बातचीत करते हुए निम्न बिन्दुओं पर विचार करने को कहा जाएगा –

1. सभी बच्चों के सीखने के अवसर किस चित्र में उपलब्ध हैं ? और कैसे ?
2. इसके लिए शिक्षक को किस प्रकार की तैयारी करनी होगी ?
3. कक्षा व्यवस्था किस प्रकार की होगी ?
4. कैसे पता चल रहा है कि सभी बच्चों की औसत उपलब्धि प्राप्त हो रही है।

चरण–2 : उपसमूहों के द्वारा दोनों चित्रों पर लिखे विचारों का प्रस्तुतीकरण किया जाएगा, जिसके लिए सभी उपसमूहों को 5–5 मिनट का समय दिया जाएगा। यदि किन्हीं बिन्दुओं पर समूह की असहमति की स्थिति बनती है तो उस बिन्दु पर सामूहिक चर्चा की जाएगी।

सत्र समेकन

पीपीटी के माध्यम से बाल–केन्द्रित शिक्षण प्रक्रिया का प्रस्तुतीकरण करके संभागियों से सीसीपी के बारे में अपनी राय को जानते हुए सत्र समेकित किया जाएगा। साथ ही सभी संभागियों को पढ़ने के लिए संलग्नित आलेख दिया जाएगा। (अनुलग्नक 5)

4 बाल–केन्द्रित शिक्षण पार्ट 2

भूमिका

बच्चों के साथ भाषा शिक्षण में अलग अलग प्रक्रियाओं, गतिविधियों व तरीकों को उपयोग में लेने की आवश्यकता है। सभी बच्चे सीख सकते हैं, लेकिन उनकी गति व स्तर के अनुसार काम करते हुए अलग अलग शिक्षण सामग्रियों का उपयोग करना आवश्यक है।

उद्देश्य

- प्राथमिक कक्षा में हिन्दी शिक्षण प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- हिन्दी शिक्षण के आवश्यक गतिविधियों को जान सकेंगे और कक्षा में उनका उपयोग कर सकेंगे।
- बच्चों के स्तर के अनुसार शिक्षण कार्य करने को समझ सकेंगे।
- सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण व उपयोग कर सकेंगे।
- शिक्षण प्रक्रिया के दौरान आकलन प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- विभिन्न प्रकार से कार्य करने के तरीकों को समझ सकेंगे।
- भाषा शिक्षण में कहानी पर काम करने के तरीकों को जान सकेंगे।
- भाषा शिक्षण में खेलों का महत्त्व व उनके इन्टिग्रेशन को समझ सकेंगे।

सामग्री

पुस्तकें, तैयार योजना, शिक्षण सामग्री (खेल बोर्ड,चार्ट,शब्द कार्ड, मात्राकार्ड वर्ण व शब्द चकरी), अभ्यास पत्रक, आकलन पत्रक व गतिविधियों का संकलन, खेल गतिविधियाँ, खेलों का संकलन, आइलेट, रुमाल, चॉक आदि।

चर्चा के बिन्दू

- भाषा शिक्षण की आरंभिक गतिविधियाँ क्या–क्या हो सकती हैं, और इनकी आवश्यकता क्यों होनी चाहिए?
- विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री के उपयोग करने से क्या बच्चे ज्यादा सक्रिय भागीदारी के साथ सीखने का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं?
- इसके लिए शिक्षक को किस प्रकार के अध्ययन–अध्याापन की आवश्यकता आपको लगती है, या इसकी कोई आवश्यकता नहीं है?

सत्र संचालन हेतु गतिविधियाँ

चरण–1 : संभागियों को आठ छोटे उपसमूहों में विभाजित करते हुए अनुलग्नक – में दी गई भाषा शिक्षण की आरंभिक गतिविधियों में से आठ अलग–अलग शीर्षक दें, और कहें कि उनके पास उपलब्ध हिन्दी की हैंडबुक में से इस प्रकार के शीर्षक वाली गतिविधि को खोजें और उसमें लिखे अनुसार

उपसमूह में गतिविधि को तैयार करें, इसके लिए संभागियों को लगभग 30 मिनट का समय दें।इस कार्य के लिए चार प्रश्न और दें जिससे कि शिक्षण गतिविधियों के शिक्षाशास्त्र की ओर ध्यान केन्द्रित किया जा सके।

- इस गतिविधि में प्रमुख्य रूप से किस कौशल पर ज्यादा फोकस दिया गया है?
- गतिविधि के उद्देश्य क्या हैं?
- सतत रूप से इसमें आकलन की कौन सी प्रक्रिया और सूचक लिए जा सकते हैं?
- क्या किसी अन्य विषय के साथ यह गतिविधि इन्टीग्रेशन का अवसर भी उपलब्ध करवाती है?

चरण–2 : उपसमूहों में किए गए कार्य की प्रस्तुति के किन्हीं चार उपसमूहों को आमंत्रित करें, उनपर सभी के विचार जानने का प्रयास करें । सभी के विचारों व अनुभवों का सम्मान करें।

चरण–3 : प्रारंभिक लिपि लेखन–पठन सीखने के लिए बच्चों के साथ किस प्रकार की शिक्षण सामग्री का इस्तेमाल करते हुए कार्य किया जा सकता है, इसके लिए सभी आठ उपसमूहों को खेलबोर्ड शिक्षण सामग्री दें एवं इस पर कार्य किस प्रकार से किया जाता है को संक्षिप्त रूप से समझाते हुए स्वयं उपसमूह को कार्य करने के लिए निर्देर्शित किया जाएगा। इस खेल गतिविधि पर कार्य करने के दौरान निम्न लिखित बिन्दुओं को दें, जिस पर समूह अपने अनुभव शेयर करेंगे –

- सामग्री का उपयोग करते समय किन–किन अवधारणाओं पर कार्य हो रहा था?
- इसके बढ़ते चरणों के दौरान सीखने की प्रगति को किस प्रकार से देखा जा सकता है?
- बच्चों में अन्य किस प्रकार के कौशलों के विकास की संभावना नजर आई?
- खेलते समय समूह ने कैसा महसूस किया ?

सत्र समेकन

प्रशिक्षक ब्लैकबोर्ड या मौखिक रूप से बालकेन्द्रित शिक्षण पर आधारित गतिविधियों के दौरान संभागियों के अनुभवों को लेते हुए बच्चों के सीखने, चिंतन करने, संलग्नता और भागीदारी की स्थिति किस प्रकार की होती है, जो कि उनके सीखने में सक्रिय भागीदारी को सुनिशचित किया जा सकता है, इस प्रकार की शिक्षण प्रक्रियाओं के चलते विद्यालयों में बच्चों के शैक्षिक स्तरों को उन्नत करने और अनियमितताओं को कम करने में मददगार हो सकते हैं को बताते हुए सत्र को समेकित करें साथ ही अध्ययन हेतु अनुलग्नक 8,9 व 10 दें जिसे वे घर पर अध्ययन कर सकते हैं।

अतिरिक्त सत्र

नवीन गतिविधि : यदि समय रहे तो उसके लिए लिया जा सकता है।

चरण–1 : खेल सत्र के प्रारम्भ में संभागियों को भाषा का खेल खिलवाने को कहें, खेल ऐसा हो जिसमें सवाल–जवाब के रूप में संवाद हों।

एक और खेल संदर्भ व्यक्ति के द्वारा भी सभी को खिलवाया जाए – बोलो क्या करोगे?

(खेल –सभी संभागियों को एक घेरे में बैठाना और समूह में से कोई एक संभागी नेता का चुनाव करना। नेता– द्वारा बोला जाएगा– बोलो –बोलो क्या करोगे, लड्डू का क्या करोगे? सभी के द्वारा कहा जाएगा– लड्डू खाने की चीज है लड्डू को खाया करेंगे।इसी प्रकार से बदलते क्रम में किसी वस्तु का नाम लिया जाएगा और समूह उसका जवाब देगा। यह क्रम संवाद के रूप में चलेगा। खाने की , पीने की अलग–अलग चीजों के नाम एक क्रम में जल्दी–जल्दी बोलें और अचानक बीच में वस्तु का नाम बदल दें, इससे जवाब में कुछ लोग गड़बड़ी कर सकते हैं।)

खेलों को खेलने के बाद निम्न सवालों के माध्यम से चर्चा को आगे बढ़ाएँ –

- खेल के बाद अचानक से वस्तुओं के क्रम को बदलने से ऐसा क्यों हुआ?
- संवाद करते समय क्या–क्या हो रहा था?
- बच्चों में संवाद कौशल का प्रभाव उनके भाषा सीखने में किस प्रकार से काम आ सकता है?

इन सवालों के जवाबों को बोर्ड/पीपीटी/ चार्ट पेपर में समेकित करते जाएं।इसके बाद संभागियों के द्वारा आए प्रत्युत्तरों को उनसे ही वर्गीकृत करने के लिए कहें। किस प्रकार से वर्गीकरण किया गया उसपर बात करें, साथ ही इस बात की ओर लाने का प्रयास करें कि– '' भाषाई कौशलों के अंतर्गत इनको किस प्रकार से देखा जा सकता है।

उदाहरण के रूप में भाषाई कौशल– 'सुनकर समझना और बोलना' के सन्दर्भ में विस्तार से बातचीत करें जिससे कि बच्चों के भाषा विकास के अन्तर्गत अभिव्यक्ति कौशल की आवश्यकता और उससे सीखने–सिखाने में पड़ने वाले प्रभाव को समझने में मदद मिल सके।

चरण–2 :

लिपि सीखने का खेल–2 : इस खेल में आपको आइलेट कार्डस् (फलैस कार्डस) की आवश्यकता होगी। आइलेट एक प्रकार के कार्ड हैं जिन्हें गले में लटकाया जा सकता है। यह खेल रुमाल –झपट्टा खेल जो कि दो दल बनाकर खेला जाता जिसमें बराबर की संख्या में बच्चे होते हैं ।

इसके लिए उपलब्ध स्थान में 10 से 15 फीट की दूरी पर दो समानान्तर लाइनें खींच दी जाती हैं । इन दोनों लाइनों के मध्य लगभग 2–3 फुट का व्यास का एक गोल घेरा बना दिया जाता है। घेरे के अन्दर एक रुमाल रखा जाता है। दोनों दलों के बच्चे लाइन से अपनी–अपनी लाइन में खड़े हो जाते हैं और उनको एक–एक क्रमांक दे दिया जाता है। खेल खिलाने वाला व्यक्ति जो भी क्रमांक बोलता है दोनों दलों से उस क्रमांक के बच्चे बीच में रखे रुमाल को लेने आते हैं और जो पहले रुमाल उठाकर दूसरे दल के बच्चे द्वारा बिना छुए अपने दल की लाइन में पहुँच जाता है उसके दल को एक अंक दिया जाता है।

इस खेल के बारे में संभागियों को बताते हुए उन्हें इस खेल के रूपांतरित स्वरूप जो कि लिपि शिक्षण के प्रभावी उपयोग के रूप में काम में लिया जाता है। को समझाएं और सभी को इस खेल को खिलवाएँ।

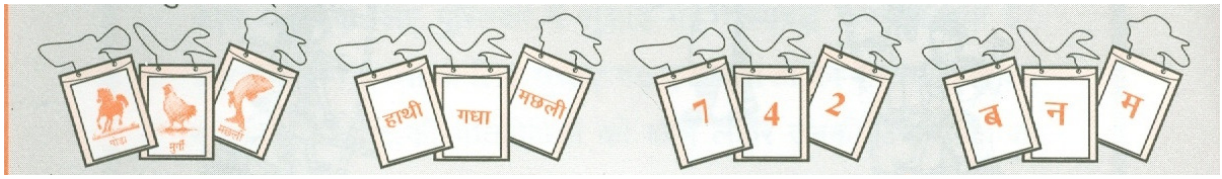

खेलने के उपरांत खेल से जुड़े प्रभावी मुद्दों को चिह्नित करें। इस खेल से जुड़े कक्षाकक्षीय प्रक्रिया के उपयोग से **आइलेट खेल संबंधी वीडियो का अवलोकन करवाएं।**

सत्र समेकन

सत्र के दौरान खेले गए अलग–अलग प्रकृति के खेलों से बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में आने वाले बदलावों यथा– सक्रियता, सहभागिता,संप्रेषण क्षमता, नियमों को समझना, पठन –लेखन में उपयोग करना आदि पहलुओं को उजागर करते हुए सत्र को समेकित करें।

साथ ही ऐसे खेलों की सूची एवं उनको खेलने के तरीकों को प्रति यदि उपलब्ध हो तो उसे शेयर करें। अन्यथा संभागियों के साथ मिलकर ऐस भाषाई खेलों की सूची तैयार करें।

तकनीकी सत्र : 5, 6

क्र.सं.	सत्र की विषय वस्तु	पठन सामग्री	कुल समय
5 6	सतत एवं व्यापक आकलन दस्तावेज़ बदलाव एवं समझ निरंतर.....	सीसीई दस्तावेज	2 घण्टा 45 मिनट

5-6

सतत एवं व्यापक आकलन दस्तावेज़ बदलाव व समझ

भूमिका

आकलन सीखने–सिखाने और पढ़ने–पढ़ाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है अतः आकलन एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है, इसलिए आकलन रोज़ की गतिविधियों के साथ स्वाभाविक रूप से किया जाना चाहिए और एक निश्चित समयावधि के दौरान उनकी प्रगति का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। आप पाएंगें कि एक अंतराल यानि प्रत्येक टर्म के बाद अब तक की रिकॉर्डिंग का विश्लेषण करने पर हर बच्चे की प्रगति एक रेखीय नहीं होगी। हो सकता है कि वह कई उतार–चढ़ावों के बाद जिस पड़ाव पर पहुँचा है वह केवल अकादमिक नहीं होगा। मनोवैज्ञानिक, सामाजिक अन्य बहुत से कारण हो सकते हैं। दरअसल जब हम व्यापक की बात करते हैं तो ये सब मायने रखते हैं। बच्चा एक व्यक्ति के रूप में, एक नागरिक के रूप में, यानि संपूर्ण मानव के रूप में कैसे प्रगति कर रहा है, उसे समझा जा सकता है।

भाषा शिक्षण के संदर्भ में भी आकलन और मूल्यांकन की प्रक्रिया इसी सिद्धांत की माँग करती है। भाषायी कौशलों का आकलन/मूल्यांकन कैसे किया जाए ? यदि हम व्यापक संदर्भ में देखें तो मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चों के सीखने की क्षमताओं का आकलन करना और सीखने के दौरान सामने आने वाली समस्याओं की पहचान करना होता है। भाषा के संदर्भ में मूल्यांकन के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं –

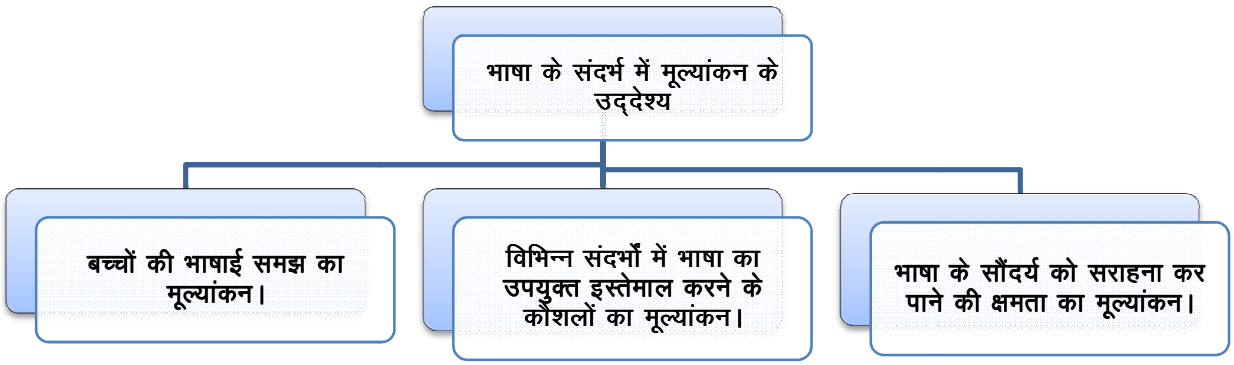

उद्देश्य

- सतत एवं व्यापक आकलन दस्तावेजों को समझ सकेंगे।
- आकलन हेतु तैयार दस्तावेजों में हुए बदलावों को समझ सकेंगें।
- भाषा शिक्षण में आकलन की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- आकलन के दस्तावेजों व उनके उपयोग को जान सकेंगे।
- आकलन के प्रकार व तरीकों को समझ सकेंगे।
- हिन्दी भाषा में रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन को समझ सकेंगे।

चर्चा के बिन्दू

- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के कौन–कौन से दस्तावेज हैं उनकी क्या अवधारणा है।
- किस–किस प्रकार के बदलाव की संभावना इसमें लगती है।
- आकलन के कौन–कौन से कारगर तरीके हो सकते हैं।

सामग्री

- हिन्दी भाषा शिक्षण आकलन का पीपीटी, कागज व पेन्सिल, अभ्यास पत्रक,सी सी ई दस्तावेज।

सत्र संचालन हेतु गतिविधियाँ

चरण–1 : संभागियों के द्वारा पूर्व में सीसीई से संबंधित जानकारी के संदर्भ में खुली चर्चा करना। जिसके अंतर्गत उनके द्वारा सीसीई से संबंधित किए गए कार्य/जानकारी, प्रमुख चुनौतियों एवं संबंधित कारगर पक्षों को सूचीबद्ध करवा जाएगा। यह कार्य पूर्णतः व्यक्तिगत स्तर पर किया जाएगा। जिससे कि सभी के अनुभवों को ठीक से व्यवस्थित किया जा सके। सभी के विचारों/अनुभवों/भ्रान्तियों/चुनौतियों को समेकित करते हुए समूह से उभरकर आए प्रमुख मुद्दों पर चर्चा करना। जिसमें राज्य में चल रही सीसीई स्कीम एवं उसकी आवश्यकता, बच्चों के सीखने में पड़े प्रभाव, सीखना और आकलन दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं न कि अलग–अलग इकाई इस संदर्भ को समझ पाना। जिससे कि कार्य के प्रति एक विश्वास बनाया जा सके। इसके बाद अध्ययन हेतु प्रत्येक संभागी को दिया जाये। अध्ययन के बाद सामूहिक रूप से खुली चर्चा कर सीसीई की प्रक्रिया को समझा जाये। (अनुलग्नक 10)

चरण–2 : पहले सीसीई दस्तावेजों को उप समूह व व्यक्तिगत रूप से अध्ययन हेतु दिया जाये, इसके लिए करीब 20–30 मिनट का समय दिया जाये और उपसमूह में समझने का अवसर दिया जाये। इसके बाद **सीसीई** प्रक्रिया व दस्तावेजों को की प्रक्रिया को क्रम से बताया जाये।

1. आधार रेखा आकलन/पस्थापन– इसकी आवश्यकता, इसकी प्रक्रिया व उपयोग में लिये जाने वाले टूल पर विस्तार से चर्चा करे। टूल व गतिविधियाँ करके भी बताये जाये। इस आधार पर समूह निर्माण करने की प्रक्रिया।
2. पाक्षिक योजना निर्माण में सामूहिक, उपसमूह, व्यक्तिगत, सतत आकलन योजना व समीक्षा के प्रारूप पर पहले ही बात की जाचुकी है, यहाँ पर इनके निर्माण व तैयारी की चर्चा की जाये।

3. कक्षा प्रक्रिया के दौरान सतत रचनात्मक आकलन (चैकलिस्ट) करने की प्रक्रिया को बताते समय चैकलिस्ट का अवलोकन कराये और उनमे अंकित सूचकों पर रचनात्मक आकलन करन की प्रक्रिया पर पूरी समझ बनाने का प्रयास करे।
4. योगात्मक आकलन दर्ज करने की प्रक्रिया जिसमें रचनात्मक आकलन, पोर्टफोलियो, स्वयं का अवलोकन, व पेपर पेन्सिल टैस्ट का उपयोग करके दर्ज करना है, इस पूरी बातचीत की जाये। इसके साथ साथ अभिलेख पंजिका का अवलोकन भी कराये। योगात्मक आकलन के सूचक जो रचनात्मक आकलन की चैकलिस्ट में दिए गए हैं, उनमें दर्ज करके समेकित ग्रेड अभिलेख पंजिका में कैसे देनी है, इस प्रक्रिया को समझाया जाये।
5. पोर्टफोलियो की आवश्यकता, महत्त्व व उपयोग पर चर्चा करें।

नोट– दस्तावेजों पर बातचीत करते समय इस बात का ध्यान रखें कि यह बच्चे के शिक्षण को अच्छा बनाने के लिए है, इनका उपयोग बच्चे का आकलन करने, उनके लिए शिक्षण योजना व तैयारी करने के लिए है।

रचनात्मक आकलन की प्रक्रिया को समझना।

क्या– रचनात्मक आकलन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है। यह आकलन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान आकलन किया जाता हैं जिसमें यह देखा जाता है कि प्रत्येक चरण में बच्चे कैसे सीख रहे हैं ? उन्हें सीखने में क्या कठिनाई महसूस हो रही है ? वे किस अवधारणा के बारे में नहीं पा रहे हैं ? नहीं सीख पाने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं? जिन बच्चों ने सीखा है वे किस तरीके से सीखते हैं ? इन सब बातों को ध्यान में रखकर सभी बच्चों को वांछनीय परिणाम प्राप्ति के लिए विभिन्न तरीकों से दी जा रही प्रतिपुष्टि एवं समर्थन ही रचनात्मक आकलन है।

क्यों– सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक बच्चा कैसे सीखता है ? यह जानने और उसके अनुसार शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव (तरीके, वातावरण) लाने के लिए रचनात्मक आकलन आवश्यक है। अर्थात सीखने में बच्चों द्वारा इस्तेमाल की जा रही योग्यता, प्रक्रिया, अनुभव, दृष्टिकोण आदि को समझ कर उसे सीखने के उद्देश्य से जोड़ कर क्रियाकलाप करना तथा सीखने के प्रमाणों की समीक्षा करके उन्हें आवश्यक पृष्ठपोषण एवं मदद करना।

कैसे– योजना में उद्देश्यों के सापेक्ष नियोजित की गई गतिविधियों (सामूहिक, उपसमूह एवं व्यक्तिगत कार्य) के क्रियान्वयन या सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चे किस प्रकार कार्य कर हैं या सीख रहे हैं? इसका सतत आकलन योजना के आधार पर शिक्षक द्वारा विभिन्न टूल्स एवं तकनीक के माध्यम से सतत रूप में आकलन किया जाता है।

योगात्मक आकलन

क्या– प्रत्येक टर्म में विभाजित पाठ्यक्रमीय लक्ष्यों के सापेक्ष उपलब्धि के स्तर के आकलन को योगात्मक आकलन कहा गया है।

क्यों– टर्म के लिए निर्धारित लक्ष्यों के सापेक्ष बच्चे की उपलब्धि को समझना एवं तदनुरूप आगे के लिए लक्ष्य एवं योजना का निर्धारण करना। निश्चित समय अन्तराल में बच्चे की प्रगति एवं स्थिति को अभिभावक एवं बच्चे के साथ शेयर करना।

कैसे– टर्म के लिए निर्धारित अधिगम उद्देश्य एवं आकलन के सूचकों के सापेक्ष किए गए रचनात्मक आकलन का समेकन एवं निर्धारित अधिगम उद्देश्यों पर अधारित आकलन टूल एवं गतिविधियों के द्वारा (ब्लूप्रिन्ट के सापेक्ष निर्मित)।

चरण–3 : हिन्दी भाषा शिक्षण में आकलन एवं आकलन सूचकों से संबंधित पीपीटी का प्रस्तुतीकरण करना एवं संबंधित आलेख को उपसमूहों में पढ़ने को दिया जाएगा। चर्चा करके हिन्दी में आकलन किस प्रकार किया जा सकता है, उन तरीकों को जानना।

चरण–5 : सर्व प्रथम उपसमूहों में दो प्रकार के कार्यपत्रक दिये जायेंगे। इनमें एक सूचना आधारित होगा और दूसरा ब्लूम टैक्सोनोमी के आधार पर तैयार किया हुआ होगा। इन दोनों कार्य पत्रकों का विश्लेषण किया जायेगा। तत्पश्चात बच्चे के सर्वांगिण विकास व भाषा के कौशलों को ठीक से मूल्यांकन करने के लिउ उपयुक्त कार्यपत्रक का चयन कर कार्यपत्रक की आवश्यकता व महत्ता पर बातचीत की जायगी।

चरण–6 : कार्य पत्रकों के संदर्भ में लिखा गया लेख पढ़ने के लिए देना। उसी विचार के साथ छोटे उप समूहों में प्राथमिक कक्षा स्तर की विषय वस्तु आधारित अभ्यास कार्य एवं आकलन पत्रक तैयार करना।

सत्र समेकन

सत्र प्रस्तुति के उपरांत एक बार पुनः संभागियों से जान लें कि हिन्दी विषय में आकलन सूचक, उनका सतत रूप से आकलन करने की प्रक्रिया में कोई संशय या प्रश्न तो नहीं है। इसको पुनः देखा जायेगा।

तकनीकी सत्र : 7

नियोजन प्रक्रिया, क्रियान्वयन एवं समीक्षा

भूमिका

शिक्षक पाठ्यक्रम एवं पाठ्यक्रमणीय उद्देश्यों के सापेक्ष बच्चों के साथ में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए लिखित रूप में सुव्यवस्थित तैयारी को ही शिक्षण योजना कहा जाता है। बच्चों में कक्षानुरूप अपेक्षित समझ और योग्यताओं का विकास करने के लिए यह सोचना आवश्यक हो जाता है कि बच्चों को क्या सिखाना है, किन–किन तरीकों से सिखाना है ? इसके लिए हमें किन–किन शिक्षण विधा, गतिविधियों एवं सामग्रियों की आवश्यकता होगी है?

किस समझ/कौशल/ज्ञान (पूर्व अनुभव, विषय वस्तु, कौशल) का आकलन करना है? आकलन कब–कब करना है? आकलन के लिए कौन–कौन से उपकरण (Tools) उपयोग में लेने है ? इन सभी बातों को शिक्षण आकलन योजना में समाहित करना आवश्यकता है।

उद्देश्य

- बच्चों की आवश्यकता व स्तर के अनुसार शिक्षण की तैयारी कर सकेंगे।
- बच्चों को अपने स्तर के अनुसार काम करने के अवसर मिल सकेंगे।
- कक्षा में शिक्षण कार्य करने में सुविधा होगी।
- बच्चों का वस्तुनिष्ठ आकलन करने में मदद मिल सकेगी।

सामग्री

कक्षा–कक्ष शिक्षण से संबंधित वीडियो, वीडियो से संबंधित विश्लेषण प्रपत्र, चर्चा।

चर्चा के बिन्दू

- योजना बनाने की आवश्यकता क्यों है?
- एक बेहतर योजना के क्या–क्या पक्ष हो सकते हैं, जिससे कि बच्चों के सीखने को गुणवत्ता के रूप में इन्श्योर किया जा सके।

सत्र संचालन हेतु गतिविधियाँ

चरण–1 : सर्व प्रथम हिन्दी कक्षा कक्ष प्रक्रिया का वीडियो दिखाया जायेगा। वीडियो के विश्लेषण से संबंधित सभी को एक प्रपत्र दिया जएगा जिसमें प्रत्येक संभागी को अपने विचार लिखने को कहा जाएगा।

नाम : ..... **जिला :** .....

1 दिखाई गई कक्षा प्रक्रिया के लिए शिक्षिका की तैयारी किस प्रकार की होगी ?

.....

2 कक्षा में उपसमूह निर्धारण का आधार क्या रहा होगा ?

.....

3 शिक्षिका ने किस प्रकार से सतत आकलन किया ?

.....

4 प्रस्तुत वीडियो में परस्पर आकलन की क्या प्रक्रिया रही ?

.....

5 बच्चों की भागीदारी किस प्रकार की रही ?

.....

6 शिक्षिका ने बच्चों को कैसे प्रोत्साहित किया ?

.....

चरण–2 : समूह में उन में से अलग–अलग संभागियों से प्रश्नों का प्रस्तुतीकरण करवाया जाएगा और चर्चा के माध्यम से वीडियो के आधार पर किस प्रकार की योजना की रूपरेखा/प्रारूप उभर कर आ रहा था इस पर उपसमूहों द्वारा प्रारूप को उभारा जाएगा तथा बालकेन्द्रित शिक्षण के मुख्य उद्देश्यों को चिह्नित किया जाएगा।

चरण–3 : पूर्व से तैयार एक पाठ की योजना को संभागियों के साथ सामूहिक रूप से शेयर किया जाएगा। जिसके प्रत्येक बिन्दु को स्पष्टतः करते हुए प्रशिक्षक द्वारा समझाया जाएगा। तत्पश्चात् संभागियों को 4 से 6 के उपसमूहों में विभक्त किया जाएगा। और प्रत्येक उपसमूह के लिए एक पाठ का निर्धारण करते हुए योजना के फॉर्मेट में पाक्षिक रणनीतिक योजना तैयार करने के लिए कहा जाएगा। इस कार्य के लिए उन्हें पाठ्यपुस्तक, टर्मवार ,पाठ्यक्रम विभाजन एवं आकलन चैकलिस्ट की प्रति दी जाएगी जिसकी सहायता से उन्हें योजना तैयार करने के लिए निर्देशित किया जाएगा। यहाँ पर यह स्पष्टतः बताया जाए कि योजना के लिए पूर्व तैयारी गतिविधियों के अनुसार करनी है जिसका कार्य के बाद प्रस्तुतिकरण करवाया जाएगा। प्रशिक्षक व अन्य संभागियों द्वारा दिए गए फीडबैक के आधार पर उसमें आवश्यक संशोधन करने को कहा जाएगा।

सत्र समेकन

सत्र का समेकन करते हुए शिक्षण की योजना से संबंधित प्रारूप को पीपीटी/बोर्ड पर डायग्राम के माध्यम से समझाया जाएगा। इसके लिए हैंडबुक–हिन्दी के अनुलग्नक–6 में दिए गए डायग्राम का उपयोग किया जाएगा।

तकनीकी सत्र : 8

रचनात्मक,योगात्मक मूल्यांकन हेतु विभिन्न टूल्स की समझ

भूमिका

कक्षा कक्षीय शिक्षण, अधिगम में कार्यपत्रकों की अपनी विशिष्ट भूमिका रही है। सीखने–सिखाने एवं आकलन के टूल के रूप में शिक्षक के लिए ऐसे कार्यपत्रकों की आवश्यकता है जो कि किसी भी अवधारणा, पाठ, इकाई आदि के सन्दर्भ में बच्चों के सीखने को बढ़ाने (inhance) में, अभ्यास करने में सहायक हों और एक आकलन टूल के रूप में भी मददगार हों।

उद्देश्य

- ब्लू प्रिन्ट की समझ बना सकेंगे।
- अभ्यास एवं आकलन हेतु कार्य पत्रकों की संरचना को समझ सकेंगे – कार्य करने हेतु समझने योग्य निर्देश, उद्देश्य एवं फीड बैक हेतु स्थान।
- प्रश्नों का नियोजन एवं गतिविधि आधारित कार्य पत्रक की समझ बना सकेंगे।
- आकलन के लिए अभ्यास पत्रकों ,योगात्मक आकलन के टूल निर्माण को समझ सकेंगे।
- योगात्मक आकलन टूल के निर्माण की प्रक्रिया को जान सकेंगे।
- कार्य पत्रक की जाँच एवं फीड बैक की समझ बना सकेंगे।

चर्चा के बिन्दू

- आकलन टूल्स बनाने के लिए ब्लू प्रिंट की आवश्यकता क्यों होनी चाहिए?
- प्रश्नों के नियोजन में विविधता रखने से क्या होगा, क्या विविधता रखनी भी चाहिए या नहीं?

सामग्री

संदर्भ पुस्तकें , चित्र चार्ट ,पाठ्य पुस्तकें ,पेपर, पेन ,पैंसिल ,स्केल एवं रंग।

सत्र हेतु गतिविधियाँ

चरण–1 : समूह में कार्य पत्रकों के संदर्भ में आरम्भिक भूमिका रखते हुए छोटे उपसमूह में बच्चों द्वारा किए गए कार्य पत्रक जाँच एवं विश्लेषण एवं फीडबैक के लिए देना संभागियों को दिए जाएंगे।

चरण–2 : बड़े समूह में प्रत्येक उप समूह द्वारा किए गए कार्य का प्रस्तुतीकरण करना एवं सम्भागियों के आवश्यक सुझावों को जोड़ते हुए कार्यपत्रकों के संदर्भ में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

चरण–3 : कार्य पत्रकों के संदर्भ में दिए गए लेख को पढ़ने के लिए दिया जाएगा। उसी विचार के साथ छोटे उप समूहों में प्राथमिक कक्षा स्तर की विषय वस्तु आधारित अभ्यास कार्य एवं आकलन पत्रक तैयार करवाने का कार्य किया जाएगा।

कार्यपत्रक नमूनाः अभ्यास एवं आकलन (आलेख)

कक्षा कक्षीय शिक्षण,अधिगम में कार्यपत्रकों की अपनी विशिष्ट भूमिका रही है। सीखने–सिखाने एवं आकलन के टूल के रूप में शिक्षक के लिए ऐसे कार्यपत्रकों की आवश्यकता है जो कि किसी भी अवधारणा, पाठ, इकाई आदि के सन्दर्भ में बच्चों के सीखने को बढ़ाने (inhance)में, अभ्यास करने में सहायक हों और एक आकलन टूल के रूप में भी मददगार हों।

कार्यपत्रकों की रचना में इस बात की ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता होगी –

- किसी पाठ से बाँधने की जगह स्वतंत्र रूप से भाषाई कौशलों को बढ़ाने में मदद दे सकें।
- बच्चों को काम करने में खुशी व मजेदार अनुभव दे सकें।
- गतिविधियों की विविधता हो, जिससे कि अवधारणा का ठीक से अभ्यास/दोहरान हो सके।
- सवाल या प्रश्न आसानी से समझ आ सकें, यदि घर पर कार्य करने के लिए दिया जाए तो, माता–पिता भी प्रश्नों को समझकर अपनी निगरानी में कार्य करवा सकें।
- कक्षा 1 से 3 तक अपेक्षाकृत बड़े अक्षर हों।
- चित्रों में स्पष्टता हो।

दो प्रकार के कार्यपत्रकों को विशेष रूप से देखा जा रहा है–

- अभ्यास कार्यपत्रक
- आकलन कार्यपत्रक

अभ्यास कार्यपत्रक : ये वे कार्यपत्रक हैं जो कि बच्चों को किसी अवधारणा को समझने के बाद अभ्यास करने की दृष्टि से आवश्यक हैं, जिससे कि बच्चों की कार्यकुशलता भी बार–बार उस पर अभ्यास करने से बढ़ती है। इन कार्यपत्रकों में एक अभ्यास कार्यपत्रक के अंतर्गत एक या दो ड्रिल ही हों तो बेहतर रहेगा।

आकलन पत्रक : आकलन पत्रकों को भी दो प्रकार से देखा जाना चाहिए ।

1. **सतत रचनात्मक आकलन** : सतत रूप से जो कार्य किया जा रहा है, उसके लिए कोई अवधारणा या यूनिट तय करके छोटे–छोटे हिस्सों में आकलन पत्रक के रूप में।

2. **योगात्मक आकलन** : इसके अंतर्गत किसी एक निश्चित अवधि के लिए निर्धारित अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष उस टर्म के पूरा होने के बाद । टर्म से संबंधित मुख्य अवधारणाओं और कौशलों के बढ़ते क्रम के रूप में। यहाँ पर एक और खास बात पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है कि भाषाई कौशलों के बढ़ते क्रम में पूर्व की अवधारणाओं को समेकित करते हुए अगले टर्म में भी उनका

समावेश होना चाहिए, जिससे कि भूलने की स्थिति न हो और उत्तरोत्तर बढ़ते क्रम में कौशलों में अभिव्यक्ति की स्थिति बेहतर बनती जा सके।

ब्लू प्रिंट

आकलन के कार्यपत्रकों को बनाने से पूर्व आवश्यक होता है उससे संबंधित ब्लू प्रिंट तैयार करना। जिससे इस बात को ठीक से आकलित किया जा सके कि किस कक्षा के लिए किस प्रकृति के कितने प्रश्न रखे जाने चाहिए? प्रश्नों के प्रकार क्या होंगे? किस कौशल के अंतर्गत किस प्रकृति के कितने प्रश्नों का रखा जाएगा और क्यों रखा जाएगा? का एक खाका बनाते हुए उसके आधार पर प्रश्नों का चयन किया जाना आवश्यक होता है।

ब्लू प्रिंट का एक नमूना यहाँ दिया गया है –

1. हिन्दी भाषा की दक्षताएँ

- सुनने और पढ़ने के माध्यम से विचारों को समझने तथा वर्तनी का प्रयोग व समझ की क्षमता।
- तार्किक अनुक्रम एवं रचनात्मकता के साथ लिखने की क्षमता।
- विभिन्न संदर्भों में व्यावहारिक व्याकरण को उपयोग करने की क्षमता।

2. प्रश्नों की संख्या :

स्तर	प्राथमिक (कक्षा 1 से 5)				
	कक्षा 1 व 2		कक्षा 3 से 5		
मौखिक कार्य	4 प्रश्न		4 प्रश्न		
उपसमूह गतिविधि	1 विधा चर्चा/बातचीत		1 विधा – चर्चा		
लिखित टूल	पठन कौशल	लेखन कौशल	पठन	लेखन	व्याकरण
	4	5	4	4	2
लिखित कुल प्रश्न	14		15		

3. प्रश्नों का स्तर एवं श्रेणी

स्तर	श्रेणी	प्रकार
सरल/आसान	ज्ञान– प्रत्यास्मरण, समझ, अनुप्रयोग	• बहु विकल्पनात्मक (वैकल्पिक/सही और गलत/रिक्त स्थान/ वर्गीकरण जाँच) • निबन्धात्मक, लघु उत्तरात्मक
मध्यम स्तर	अनुप्रयोग, विश्लेषण	
उच्च स्तरीय विचार युक्त	अनुप्रयोग, मूल्यांकन, रचनात्मक	

Bodh Shiksha Samiti

बोध शिक्षा समिति, जयपुर (राज.)

अभ्यास कार्यपत्रक

विषय : हिन्दी कक्षा : 1

शाला का नाम : ---------- रोल नं. : ----------

विद्यार्थी का नाम : ---------- दिनांक : ----------

पिता का नाम : ---------- माता का नाम : ----------

लेखन कौशल

शब्द पहचान एवं लेखन अभ्यास –

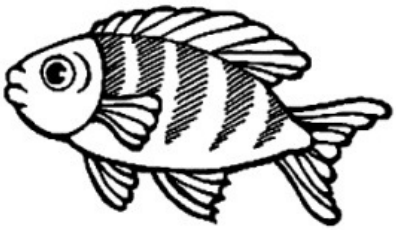

मछली

मछली मछली

मछली मछली

मछली मछली

मछली मछली

शिक्षक हस्ताक्षर एवं टिप्पणी : ----------

Bodh Shiksha Samiti

बोध शिक्षा समिति, जयपुर (राज.)

अभ्यास कार्यपत्रक

विषय : हिन्दी **कक्षा : 1**

शाला का नाम : ---------- रोल नं. : ----------

विद्यार्थी का नाम : ---------- दिनांक : ----------

पिता का नाम : ---------- माता का नाम : ----------

पठन कौशल

1. चित्र के नाम के पहले अक्षर से मिलान कीजिए –

घ		प
श		स
ग	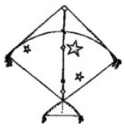	म
क		त
द		अ
र		न
ल		ब
ट	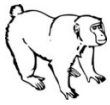	न

शिक्षक हस्ताक्षर एवं टिप्पणी :----------

बोध शिक्षा समिति, जयपुर (राज.)

समेकित रचनात्मक आकलन कार्यपत्रक

विषय : हिन्दी कक्षा : 1

शाला का नाम : -- रोल नं. : ------------------

विद्यार्थी का नाम : --- दिनांक : ------------------------
-

पिता का नाम : --- माता का नाम : --

पठन कौशल

1. चित्र का नाम से मिलान कीजिए –

बन्दर मछली नल अनार

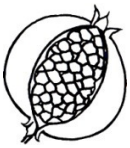

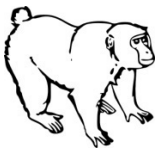

2. पहचानकर गोला लगाइए –

(ट , अ , ल)

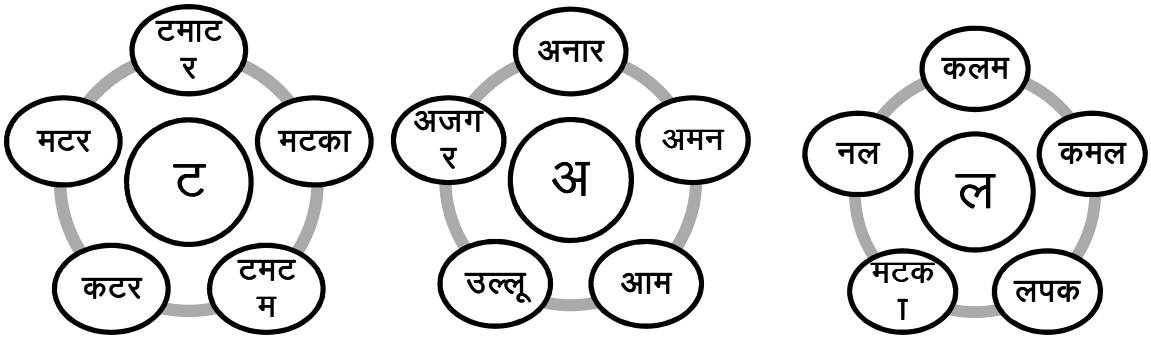

3. नीचे दिए गए वर्णों से शुरू होने वाले शब्दों के नामों के चित्र बनाइए –

प न

लेखन कौशल

4 बिन्दु मिलाकर अक्षर लिखिए –

ब न प अ

....

....

....

5. चित्र की सहायता से शब्द पूरा कीजिए –

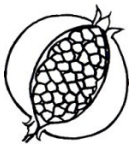

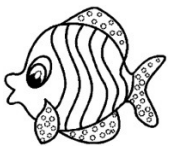

_____प _____नार _____स _____छली

शिक्षक आकलन टिप्पणी ....

....

....

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर दिनांक : ....

Bodh Shiksha Samiti

बोध शिक्षा समिति, जयपुर (राज.)

योगात्मक आकलन कार्यपत्रक

विषय : हिन्दी **कक्षा : 1**

शाला का नाम : ---------- रोल नं. : ----------

विद्यार्थी का नाम : ---------- दिनांक : ----------

-

पिता का नाम : ---------- माता का नाम : ----------

पठन कौशल

1. पढ़कर मिलान कीजिए –

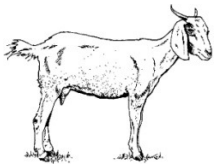
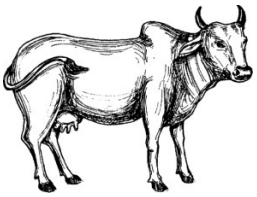
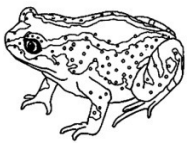

गाय मेंढक पतंग बकरी खरगोश

2. चित्र पढ़कर सही शब्द पर सही (✓) का निशान लगाइए –

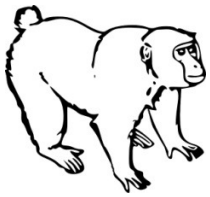

भन्दर/बन्दर चिड़िया/चीड़या दादा/दादी चहा/चूहा

3. चित्र पढ़कर शब्द पूरा कीजिए –

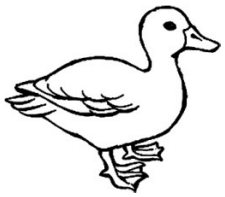

ब__ख ब__ग__ __जर अ__ __

4. चित्रों को क्रम दीजिए –

☐ ☐ ☐ ☐

पठन कौशल

5. पढ़िए और देखकर लिखिए –

सब	पलंग	बरसात	अदरक
__________	__________	__________	__________
__________	__________	__________	__________
__________	__________	__________	__________
__________	__________	__________	__________

6. नीचे बने चित्रों के नाम लिखिए –

__________ __________ __________ __________

7. मटकी में लिखे अक्षरों से दो और तीन वर्ण वाले शब्द बनाकर लिखिए –

दो वर्ण वाले	तीन वर्ण वाले
घर	बटन
__________	__________
__________	__________
__________	__________
__________	__________

8. चित्र की जगह शब्द लिखकर वाक्य फिर से लिखिए –

(क) यह 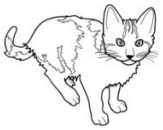 है।

_____

(ख) यह एक है।

_____

(ग) जा रहा है।

_____

(ख) बकरी खा रही है।

_____

9. अपना और माँ का नाम पूरे वाक्य में लिखिए –

(क) मेरा _____।

(ख) मेरा _____।

शिक्षक आकलन टिप्पणी .....

.....

.....

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

दिनांक : .....

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व–संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में
व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई0 (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वॉलिटि एज्यूकेशन

आदर्श विद्यालय योजना–माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार

सार्वजनिक विद्यालयों में
बालकेन्द्रित शिक्षा–शास्त्र,
सतत समग्र आकलन पद्धति एवं
सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से
सभी बच्चों की
समान गुणवत्तायुक्त प्राथमिक शिक्षा में
सफलता सुनिश्चित करने का संकल्प

An Endeavor to Ensure
Successful Completion of
Quality Primary Education
for all Children in Govt. Schools
through the approaches
of child centered pedagogy,
continuous & comprehensive assessment
and community participation

सब बच्चे अच्छा सीख सकते हैं
सभी शिक्षक अच्छा सिखा सकते हैं।

RCSE

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्

डॉ. राधाकृष्णन् शिक्षा संकुल,
ब्लॉक-6, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302017